# ॥ रसिकानन्द ॥

जिसमें

श्रीसच्चिदानन्दआनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र
वो श्रीरामचन्द्रजी के अनेक लीला
विषयक विविध राग और तालों के
पद वर्णित हैं।

जिसको

श्रीमद्राधामाधवचरणकमलमधुकर स्वस्ति श्रीमहाराज
कुमारश्रीसूर्य्यवंशोद्भव क्षत्रियप्रवर बाबू विश्वेश्वरवक्श
पालवर्म्मात्मज बाबू रङ्गनारायणपाल (रंगपाल) जू
देव वर्म्मा बीरेश जिला बस्ती रईस हरिहरपुर ने
रसिकजनों के चित्तविनोदार्थ रचना किया।

---

जिसे

भारतजीवन के अध्यक्ष बाबू श्रीकृष्णवर्म्मा ने
निज व्यय से छाप कर प्रकाशित किया।

---


॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेसमें मुद्रित हुआ।

सन् १९०७ ई०।

[प्र]थमवार १००० ]          [ मूल्य ।)

श्रीगणेशाय नमः ।

# अथ रसिकानन्द प्रारम्भः ।

## सोरठा ।

बीना पुस्तक पानि । शुक्लाम्बरा स्मितानना ॥
जय जय अभिमतदानि । हंसवाहिनो जगजननि ॥ १ ॥

## षट पदः छन्द ।

दिनकरबंश विशुद्ध जासु मधि चत्रिय कुलमणि ।
परब्रह्म अवतार भयो दासर्थि राम भणि ॥
श्रीठाकुरपरसाद पाल तिहि वंश विभूषण ।
सुत ईश्वरीप्रसाद पाल तिनके अरि-दूषण ॥
भे बक्स बिश्वेश्वर पाल जू तिनके बुधिनिधि यथा ध्रुव ।
हौं तासु तनय लघु मतिहु लघु रंगपाल जग नाम हुव ॥२॥

## दोहा ।

अवधपुरी ते जानिये, ऋषि योजन ईशान ।
ग्राम सु हरिहर पुर सुवस, ता मधि बास प्रधान ॥ ३ ॥
उनइस सौ सत्तावनो, सम्वत विक्रमराय ।
शुभ गुरु बासर सावनो, पूरणमासी पाय ॥ ४ ॥

## सोरठा ।

श्रीराधे नँद नन्द, रंगपाल उर ध्याइ कै ॥
विरच्यो रसिकानन्द, रसिकन के आनन्द हित ॥ ५ ॥

## दोहा ।

केवल गुनि या ग्रन्थ मैं, बिबिध गान के पद्य ।
चूक छमा कीजो सु कबि, गायक बुधि अनवद्य ॥ ६ ॥

## यथा—पद ।

सरद ऋतु आई सुखदाई । चांदनी चटकीली छाई ॥
सरस दिवि भूतल बिमलाई । धार जनु पारद की धाई ॥
किधौं मति नारद की भाई । जगत शुभ मारग दरसाई ॥
जगमगात आनन्द प्रद, अम्बर उदित नछत्र ।
तिन मधि शुभ राकेश जनु, नृप मनमथ को छत्र ॥
चकोरन आनद अधिकाई ॥ सरद० ॥
कास कुल कुसमित चहुँ ओरै । मालती औरहु चित चोरै ॥
बिमल जल हीरक छबि छोरै । कुमुदिनी आनन्द रस बोरै ॥
कुंज लता द्रुम छबि छये, अलि धुनि मण्डित बेस ।
रति रानी की सखि मनो, कहति मदन सन्देश ॥
दिगन्तनि सौरभ लहराई ॥ सरद० ॥
सुखद वृन्दावन मधि सोहै । बेदिका उड़पति रुचि रोहै ॥
चित्र बहु चित्रित मन मोहै । सकै समता कहि कबि को है ॥
तापर सखिजनमण्डली, मण्डित परम हुलास ।
मध्य प्रिया प्रीतम लसत, अनुपम छबि की रास ॥
सहस मुखहु न बरणि जाई ॥ सरद० ॥
ग्राम गुण बहु सुर प्रस्तारैं । रागजुत रागिणि विस्तारैं ॥
गमक आलाप बरण चारैं । तान पढ़ि मोहिनि सी डारैं ॥

बीना बांसुरि चङ्ग मिलि, बाजत मधुर मृदङ्ग।
नग थुं क्डिदिगिन धिं त्रिकिट, तक धिलाङ्ग धा,धङ्ग॥
तारि दै तालन बिलगाई॥ सरद०॥

नृत्य के भेदनि दरसावैं। सुतिर्यक यति आदिक ल्यावैं॥
भेद गति बिबिधि सु प्रगटावैं। बहुरि हस्तादिक बहु भावैं॥
झमकि धरत पग रचत गति, अति लाली सरसाय।
मञ्जुल माठ मजीठ को, मानहुँ ढरकत जाय॥
हरत मन भूषण झननाई॥ सरद०॥

मन्दहँसि जिहि दिसिको हेरैं। मरीची चन्द मनहुँ गेरैं॥
सुगन्धनि भौंर भीर घेरैं। सखी जन चारु चवँर फेरैं॥
स्वेद रश्मित आनन अलक, सोभित सोभ अथोर।
शशि-रस अहिसुत लेत कण, चुवत पुच्छ के छोर॥
निरखि सखि तन सुधि बिसराई॥ सरद०॥

प्रिया शुभ नाक मुकुत लोलै। लेत हठि प्रीतम मन मोलै॥
देत सम पै न तुलै तोलै। दुलारत चन्द नन्द को लै॥
मकराकृत कुण्डल श्रवन, झलकत मन हरि लेत।
फ़रकावत ज्यौं मदन ध्वज, बिश्व बिजै के हेत॥
रही छबि झलक चहूंघाई॥ सरद०॥

निरखि रसरास सुछबि छाको। कहत तिहुं लोक न सम ताको॥
अनूपम मंजु बनो झांको। लेत मन मोल सदा बांको॥
यह जोरी युग युग जियो, सखी लगति तृण तोरि।
रंगपाल बारत मनहिं, युत रति कोटि करोरि॥
रास रस निज मति इव गाई। सरद०॥१॥

रास रचि रसिक सु रस बोरैं। परस्पर दोउ चित चोरैं॥
सखी जनमण्डित चहुँ ओरैं। निरखि छबि प्रमुदित लघ लोरैं॥
दामिनि सजल जलद भोरैं। शोर करि नाचत बन मोरैं॥
बिहँसत दुति दौरै चहूं, सहज सुगन्ध हलोर।
अमल सरद राकेस तजि, चहके चारु चकोर॥
प्रियामुख ओर दृगनि जोरैं॥ रास०॥
बसन शुभ सोभित जरतारी। सेत नग भूषण छबि भारी॥
नचत गति रचत विविध प्यारी। लेत शुभ तान मनोहारी॥
बाजत बहु बिधि बाजने, आनद उमग अथोर।
रङ्गपाल वारत मनहिँ, युत रति काम करोर॥
हरत हिय हेरि नयन कोरैं। रास०॥ २॥

## झपताला।

रसिक दोउ रसभरे रास मण्डल लसत। रुचिर बिधु कान्त मणि बेदिका रचत गति, धरत पायन तितहिं मनहुं ईंगुर खसत॥ गौर स्यामल अमल सरस सुकुमार तन, सकत उपमा न कहि शेष दस बीस सत। अमिय रस रसित बिधु किरिणि कर निकर बर, बिपुल बरसत मनहुँ मन्द जिहि दिसि हँसत॥ ज्वलित स्रम सीकरनि अलक मुख झलक लखि, कहत उपमा तदपि मोहिँ लागति असत। मुदित अहि बाल शुभ सरद राकेश रस, पियत जनु अमिय कण पूंछ छोरन रसत॥ तासु दरस सरस करति ब्रजयुवति धनि, प्रभु मन मधुप जेहि चरण बारिज बसत। रंग जू पाल छबि निरखि अनुपम हरषि, कोटि सत रति मदन के बदन मसि घसत॥ ३॥

रास रचि रसिक सु रस बोरें । परस्पर दोउ चित चोरें ॥
सखो जुनमण्डित चहुँ ओरें । निरखि छवि प्रमुदित हग तोरें॥
दामिनि सजल जलद भोरें । शोर करि नाचत बन मोरें ॥
बिहँसत दुति दौरे चहूं, सहज सुगन्ध हलोर ।
अमल सरद राकेस तजि, चहके चारु चकोर ॥
प्रियामुख ओर दृगनि जोरें ॥ रास० ॥
बसन शुभ सोभित जरतारो । सेत नग भूषण छवि भारो ॥
नचत गति रचत बिबिध प्यारी । लेत शुभ तान मनोहारी ॥
बाजत बहु विधि बाजने, आनद उमग अथोर ।
रङ्गपाल वारत मनहिँ, युत रति काम करोर ॥
हरत हिय हेरि नयन कोरें । रास० ॥ २ ॥

## झपताला ।

रसिक दउ रसभरे रास मण्डल लसत । खचित विधु कान्त मणि बेदिका रचत गति, धरत पायन तितहिं मनहुं ईंगुर खसत ॥ गौर स्यामल अमल सरस सुकुमार तन, सकत उपमा न कहि शेष दस बीस सत । अमिय रस रसित विधु किरिणि कर निकर वर, विपुल बरषत मनहुँ मन्द जिहि दिसि हँसत ॥ ललित श्रम सीकरनि अलक मुख झलक लखि, कहत उपमा तदपि मोहिँ लागति असत । मुदित अहि बाल शुभ सरद राकेश रस, पियत जनु अमिय कण पूंछ छोरन रसत ॥ तासु दरस सरस करति ब्रजयुवति धनि, प्रभु मन मधुप जेहि चरण बारिज बसत । रंग जू पाल छवि निरखि अनुपम हरषि, कोटि सत रति मदन के बदन मसि घसत ॥ ३ ॥

बन्यो, चपल दृग पटन की गति बिसारत बन्यो। कैसहु नाहिँ अँसुआ निवारत बन्यो, प्रेम हिय थापि लाजहिँ निकारत बन्यो॥ ह्वै गई बिबस नहिँ धीर धारत बन्यो, मिलन हित ललकि हठ भुज पसारत बन्यो। हानि अरु लाभ कछु ना बिचारत बन्यो, रंग जू पाल मन वारि डारत बन्यो॥ आज०॥ ७॥

## तिताला।

सखी मन लै गयो बांसुरीवाला॥ सखी०॥ आनन अमल कुटिल लट लटको, छहरन सीस सुमोर मुकुट की, नेक चितै करि भौंहन मटकी, बौरो सो कर डाला॥ सखी०॥ फहरति छोर सुपीले पट की, थहरत उर बनमाला टटकी, पान प्रेम रस प्याला निपट को हो गया दिल मतवाला॥ सखी०॥ निरखतहीं चट मति गति सटकी, सुधि न रही घट औघट घट की, रङ्गपाल छवि हिय बिच अँटको, लाज को कढ़िगो दिवाला॥ सखी मन०॥

सखी मोहन पर वारी रे, अब जोहन हित लागिहौं गोहन॥ मोहन०॥ वागो पियरो शुभ जरतारी, जग मग मणि मुकुट सीस धारी, युग मोर चन्द्रिकन मन हारी, छवि छलक पसारी रे॥ सखी०॥ सिर केसर खोर की छवि न्यारी, मकराकृत कुण्डल चल कारी, कारी जुलफैं घूंघरवारी, अति कहर गुजारी रे॥ सखी०॥ बलि रङ्गपाल जू जदुधारी, बिहसन पुनि अँखियां रतनारी, अवलोकन बांकी तरवारी, घायल करि डारी रे॥ सखी॥ ८॥

सजन गरवां लगि जाओ हो, तेरे बिन छिन नहिँ परत

चैन ॥ गरवां ॥ दारुन बिरहानल तन तावत, कैसहु नाहीं धीरज आवत, तलफत बीतत है दिवस रैन, नांहक तरसाओ हो ॥ सजन० ॥ अब चाहत है हिय होन दरारे, नेकहु नींद न आवति प्यारे, सरसत बरसत नीर नैन, सूरत दिखलाओ हो ॥ सजन० ॥ अपनाय हाय जिनि बिसराओ, बलि रंगपाल सब कसक मिटाओ, प्याय श्रवण मग अमिय बैन, मोहि मरत जिलाओ हो ॥ सजन गरवां ॥ १० ॥

## ठुमरी।

सखी जब मन अरुझत है रे। सरुझाए कैसहु ना सरुझत जब मन अरुझत है रे ॥ सखी० ॥ रँगि गयो सांवरे रङ्ग सही, तब चढ़त दूसरो रङ्ग कहीं, जब रङ्गपाल मन हाथ नहीं, तब को समझत है रे ॥ सखी० ॥ ११ ॥

सजन कब लग तरसाओगी, भइ अब तो तुम बिन अति अचैन ॥ कब लग० ॥ बलि रङ्गपाल कबहूं इत ऐहो, ललकि लपकि गरवां लपटैहो, अमिय सरस बरसाय बैन, जिय जरत जुड़ाओगी ॥ सजन० ॥ १२ ॥

छयल मेरो हिय हरि ले गयो रे, दरसाय तनक वह बांकी अदा ॥ मेरो० ॥ अब परत नहीं दिन रैन चैन, तरसत जिय बरसत नीर नैन, बलि रङ्गपाल मन कैगो फिदा, जदुआ सिर दे गयो रे ॥ छयल० ॥ १३ ॥

बलम अबहीं जिनि बोलो हो। जागति हैं मोरी ननदिया ॥ अबहीं० ॥ अबहीं तो परी झिगुरो रतिया, चटकीली सोहै बरब दिया, लगे रंगपाल मोहिं लाज पिया, जिनि घूंघट खोलो हो ॥ बलम० ॥ १४ ॥

दिखला के,तनक वह बांकी अदा,मन के गो फिदां भरी कान्हैया । अब रङ्गपाल सखि वाके बिना, भई चाहति बावरी रे· देया ॥ दिखरा के ॥ १५ ॥

## राग-केदारा ।

जागी हो कहां रतियां । अंजन अधर मरगजे बागे, कहैं पायो माल बिन धागे ॥ जागी हो० ॥ जावक भाल कपोलन रद छद, अब मोके उनहीं के रहिये, रङ्गपाल जिन रँग रागे ॥ जा०॥

## राग परज ।

सखी अब रैन गुजर गइ री । माल मुकुत अति सोरो लगत नखत छपत होत फजर बजत गजर ॥ रैन० ॥ रङ्गपाल मोहिँ तलफत बीतो, अजहूं लों नहिँ आयो नजर वह, नहिं जानिये कौन बनिता को, खूब खिलो भाग अजर॥ रैन ॥ १७॥

## राग विहाग ।

हो का सँग रतियां जागी । रस पागी प्यारे मरगज बागी, हार हिये बिन धागी ॥ हो० ॥ रंगपाल अनुरागी नैना, बिथुरी जुलुफ अधर कजरारे, पीक लीक रद दन्त कपोलन लागी ॥ हो का सँग० ॥ १८ ॥

## राग विहाग ।

अब तुम उनहीं सों बोलो । हिय की सब खोलो, सोईं धरि करि, नाहँक हिय जनि छोलो ॥ अब० ॥ रङ्गपाल जाके रँग रागी, तिनहीं सङ्ग कलोलो डोलो, पा परियत मेरो घूंघट पट जिनि खोलो ॥ अब तुम० ॥ २० ॥

## ठुमरी बिहागरा-राग-ति० ।

अब तो नयनहू से नींद हेरानी रे । नेह लगी ऐसो जाति नहिं जानो रे ॥ अबतो० ॥ रंगपाल अखि इश्क कहानो, सुनत हूतो सो आनि बिसानो रे ॥ अबतो० ॥ १९ ॥

## राग बिहाग तिताला ।

बैठि दई तारे गिनत रतिया गई बीत, अब छतिया दरको चहति आयो नहीं मीत ॥ बैठि० ॥ रंगपाल यह बात सांची, कोटि करो ढहि जात छन मैं, ज्यों बारू को भीत, सखि ओछि की प्रीति ॥ बैठि दई० ॥ २१ ॥

देखि स्याम को डीत हिये, गरवां लपटाउँ । कैसी करूँ कासे कहूं बैरो सब गाउँ ॥ देखि० ॥ कबलौं ससकि मसूसन रहिये मन चाहत अब तो विष खाउं । रंगपाल सखि नैक झ-रोखे झँकत लोग धरियत हैं नाउँ ॥ देखि० ॥ २२ ॥

## तिताला ।

सखीरे रतिया गुजर गई । पूरब दिसि अरुणाई छई अब निपट निरास भई ॥ करि निरमोही सो सनेह जग को सुख लखो दई । रंगपाल निज हाथ हाय मैं यह विष बेलि बई ॥ सखो रे रतिया० ॥ २३ ॥

## राग खमाच तिताला ।

अब पिय उनहीं के धाम, पधारिये सुख पाय जा सङ्ग रतियां । काहे को आये हो रंगपाल जू, भोरवां, भोर बन, लगु रसु बस, अति अनुरागी, हटो चलो मोंसे करो न झूठो बतियां । अब पिय० ॥ २४ ॥

## तिताला।

ऐसो लँगर सजनी रोकत मोरि डगर। पानी भरन करत मोसे रगर झगर॥ ऐसो०॥ रङ्गपाल हारि हटकि अँचरा झटकि मटकि हँसत. कौन बसत अब यहि नगर॥ ऐसो०॥ २५॥

कैसे जाऊँ पनियाँ भरन आली। रोकत गयल, कैसो करूँ कासे कहूँ, एरी नित नित मोसो हठ ठाने, ऐसो ढीठो बनमाली॥ कैसे॥ हौंतो अरजि बरजि हारी, लँगर सो सब बिधि अहो रङ्गपाल, झपटि, लपटि, रहत, हँसति, मोहिँ ब्रज वालो॥ कैसे॥ २६॥

यार सवलिया ने मेरो मन लिया। रि आली, हारी, उन छल बलिया ने मोपै दई, नेक बिहँसि जदुआ किया॥ यार०॥ मिलावे वहि मोहि रंगपाल, रजनी यहि, एरी तेरो पैयां परू जियरा न माने,अबतो चहत बिहरि जान,हिया॥ यार०॥२७॥

अब कैसे पनियां भरन जाऊं आली रे। रगर करत मोसे बीच डगर में, ठाढ़ो रहत मनमाली रे॥ अब०॥ रंगपाल कछु बनि नहिँ आवत, गरवां लगावत, बरबस भुज गल डारी रे॥ अब कैसे॥ २८॥

काहे मोरो रतियां सुरतियां भुलाइ हो। तारे गिनत थकीं अखियाँ हमारो, नेकहुं निदिया न आइ हो॥ तुम तो अनत बसि ऐन चैन लहे, हमको तो भल तरसाइ हो। रंगपाल मन ऐसो हुतो तो, नाहक सनेहिया लगाइ हो॥ काहें॥ २९॥

देखो मोरी सजनी पकरि लीनी बांहीं रे। नटखट निपट झटकि झट पट पट, लूटो इन लाज बरबस मग माहीं॥ मो०॥

छाहा करति रही पइयां परति रहीं, कुञ्ज कदम की छाहीं रे, यकहू नहिँ मानो रंगपाल मेतो, हारी कहि कहि नाहीं नाहीं हम नाहीं ॥ मोरि सजनी० ॥ ३० ॥

अजहूं न आये मनभालो आली रे। अब कैसहुँ जिय धीर धरत नहिँ चाहति है निसि चाली ॥ सोरी सरव भई सुकताली लखियत हैं नभ लाली। रंगपाल मोहिँ छाय दगा दै अनत कहूं रति पाली ॥ आली रे ॥ ३१ ॥

पिया बिन गुजर गई सारी रैन। मग निरखत थके नैन ॥ पिया० ॥ रङ्गपाल कैसो करूं सजनी अब न पड़त जिय चैन ॥ पिया बिन ॥ ३२ ॥

सखी रे तलफत रैन गई। नहिँ आयो निरदई ॥ सखी रे०॥ करि के नेहँ निठुर सों कबहूं काहू सुख न लई। रंगपाल अब हाय दई हो सुनत हुती सो भई ॥ सखी रे० ॥ ३३ ॥

बिहँसि पिया जदुआ डाल दिया। जालिम कारी फन्द जुलफन मैं, मनहिँ फँसाय लिया ॥ बिहँसि० ॥ तन सुधि बुधि बिसराय दई सब, तनक सुनाय माधुरी बतियां, रंगपाल चितवन तरवरिया, बरबस कतल किया ॥ बिहँसि ॥ ३४ ॥

स्याम हँसि जदुआ सिर डारो रे। लोक लाज पर हाय सखी रे जुलफन कहर गुजारो रे ॥ स्याम० ॥ दै कटाक्ष अपनाय लियो मन,बरबस हरि तन सुधि बुधि सारो,रंगपाल मोहिं कतल किया री, चितवनियां तरवारी रे ॥ स्याम० ॥ ३५ ॥

स्याम कैसी बँसुरिया बजाई रे। तनक भनक जब से सुनी सजनी, जियरा तरसि तरसि रहि जाई रे ॥ स्याम० ॥ वैरी भई

बिन दाम स्याम को नाम धरो सब लोग लुगाई रंगपाल अब का पछताओ, लेहौं मैं गरवां लगाई रे ॥ स्याम० ॥ ३६ ॥

स्याम हमरो सुरति बिसराई रे । आवन आस राखि न गये सँग, जियरा समझि २ पछताई रे ॥ स्याम० ॥ औचक हाय सिधारे कि सजनो, हूक सहत हिय बिहरि न जाई, रङ्गपाल पुनि बिछुरत बेरियां, कछु नहिँ कहिगो कन्हाई रे ॥ स्याम हमरो ॥३७॥

दरस बिन स्याम तेरे ॥ हिय बिरहा दहत, जियरा रहत, तरस तरस ॥ ॥ दरस० ॥ रङ्गपाल अब कल नहिँ आवत, यक छन बीतत कोटि बरस ॥ दरस बिन ॥ ३८ ॥

बिवस भइ आज रामा ॥ मोहनी सुरति सवलो सुरति वाकि नेक दरस ॥ बिवस० ॥ रङ्गपाल अब कैसी करूं मोरि आली, जियरा रहत मोरि हाय तरस ॥ बिवस ॥ ३९ ॥

सखी वह मूरति सांवरी रे ॥ मति गति हरि लई सकल सयानप, करि दइ हमको बावरी रे ॥ सखी० ॥ भाल लिखी तिदई सु भई री, रंगपाल उनहीं को कहैबो, कहति डङ्क दे गङ्कनहीं अब, नाम धरो ब्रज गांवरी रे ॥ सखी वह० ॥ ४० ॥

निरखि छबि सजनो स्याम की रे ॥ भूलो डगर मोहिं धाम की रे ॥ निरखि० ॥ रङ्गपाल तन प्राण वारि अब, भइ दासी बिना दाम की रे ॥ निरखि० ॥ ४१ ॥

छाड़ दे छयल बहियां ॥ ऐसो ना कीजे, बीच डगर महियां ॥ छाड़ दे ॥ रङ्गपाल कोई आन पड़ैगी, मान कहो नहियां नहिँ यां ॥ छाड़ दे० ॥ ४० ॥

कन्हैया न छैडो हमैं आने दो ॥ न जानो ब्रज की लुगैया ॥

कन्हैया०॥ रङ्गपाल अब नाहिँ सहैंगो, गनि गनि एक कि लाख कहैंगो, तो सों डरैंगो हमारी बलैया॥ क०॥ ४३॥

कन्हैया छलैया रोकै गैल रे॥ चवैया लखैं तो बनै नाहिँ दैया॥ क०॥ बरजोरी गहि गरवां लगावे, रङ्गपाल को लाज नवावे पनिया भरन मोरी जाय बलैया॥ क०॥ ४४॥

डालो जादू सवलिया, यार हँसि॥ मृदु बैनन रस प्रेम बरसि॥ डालो०॥ रंगपाल सखि जुलुफ जँजीरन, बरबस मन मेरो लै गयो कसि॥ डालो जादू॥ ४५॥

मोपै डालो जादू सांवलिया॥ नैक विहँसि मन मोहि लिया॥ मोपै०॥ चितवन पैन नैन तरवरिया बरबस घायल हाय किया॥ रंगपाल अब वाके दरस बिन तलफि तलफि मोर जात जिया॥ मोपै०॥ ४६॥

मोपै हँसि हँसि के मोहनी डालो॥ रसिक छैल बनमालो॥ मोहनी॥ रङ्गपाल तजि शङ्क अङ्कुश सब प्रेम छाक मतवालो॥ मोहनी०॥ ४७॥

लाल हो तुम नीके बने रहो॥ वाही नई के सनेह सने रहो॥ लाल०॥ रंगपाल उनहीं के कहाओ, दासी हिये इक मोहूं गने रहो॥ लाल हो॥ ४८॥

## राग देस ति०।

बांसुरिया!!! कैसी धौं स्याम बजाई रुकति न पांसुरिया॥ बांसुरिया॥ रंगपाल कछु फूंकि सुनाई, लाज काज सुधि बुधि बिसराई, डारि दई गल प्रेम कि फांसुरियां॥ बांसुरियो॥५०॥

प्यारे हो!!! आओ लगि जाओ गरवां, तो बिन तलतर

प्रान ॥ प्यारे हो॥ जारति बिरह अगिनि दिन रतियां, कैसहु धीर धरति नहिं छतिया, रङ्गपाल छन बीतत कलप समान॥ प्यारे हो ॥ ५१ ॥

आली री!!! उन बिन छिन कल न परत, कहँ धौं बिरमि मोर पिय न आय ॥ आली री ॥ रंगपाल मग हेरत अँखिया, हारी धीर धरौं किमि सखिया, जियरा झखिया जल बिन ज्यौं तरफाय ॥ आली री ॥ ५२ ॥

कौने देश!!! बिरमि रहे बालम हमरा, पावती नाहिँ सँदेस ॥ कौने ॥ जनु अँगार फूले चहुं देशवा, हरत चेत चित देत कलेशवा, रंगपाल नखतेश, मनहु फण शेस ॥ कौने ॥ ५३ ॥

सेजरिया सूनी—सजनी कैसहु रजनी, अकेलि रहि नहिँ जाय ॥ सेजरिया०॥ रङ्गपाल बिरहानल सरसत, निसिवासर अँसुआ द्रिग बरसत, तलफि तलफि जिय जाय, बलम बिन हाय॥ सेजरिया सूनी ॥ ५४ ॥

आये हो!!! अब तुम काहे को, मोर मदिरवां ॥ आये हो॥ रङ्गपाल आनद सरसाओ, उनहो की परि पाय मनाओ, जाय लगाओ गरवां ॥ आ० ॥ ५५ ॥

मेरी मानिये बतियां—लाल दरस रस दोजे ॥ जात विदेश कहे वै जाते बेग मान तुव कीजे ॥ मेरे कहे पत्यात न अब चलि वलि गई सोहैं कीजे ॥ रङ्गपाल तुमैं हांस लगी उत अँसुअन अँचरा भीजे ॥ ५६ ॥

स्याम परवारी रे ॥ एरी अली वांकी चितवन मन सथ तरवारो, घायल करि डारो ॥ स्याम० ॥ रंगपाल छवि निधान,

सुख विहसन जदुआ री, बरवत तन मन सुधि बुधि हारो, घूं घरवारी जुलुफ कतल कारी ॥ स्याम० ॥ ५७ ॥

## तिताला।

कबलौं नैनन जल बरसैये, हिय तरसैये, हो ॥ कबलौं सोच समुद्र बहैये, नैनन हू भरि लखन न पैये, ओसन प्यास बुझैये, मनें समुझैये, हो ॥ जौपि ललकि गरवां न लगैये, तौपि कहा जीवन फल पैये, नाहक जिय न जरैये, बरु विष खैये, हो ॥ रङ्गपाल अब यही दिढ़ैये, स्यामहिँ लै नेकहुं न सकैये, सिगरी कसक मिटैये, कहुं कढ़ि जैये, हो ॥ कबलौं० ॥ ५८ ॥

हमरो स्याम सुरति बिसराये, मधुबन छाये हो ॥ कहि कहि बतियां अमृत सानी, बरजि रहीं जे सखा सयानी, तिन की एक न मानी, सो फल पाये, हो ॥ कारे तन की कौन परेखो, काक पालि मधुपालिन पेखो, अपनो चूक बिसेखो, नेहँ लगाये हो ॥ रंगपाल ह्वै गये पराये, सुधा दिखाय गरल अँचवाये, औरहु. जरत जराये, जोग पठाए, हो ॥ हमरो ॥ ५९ ॥

जान दे लँगरवा, डगरवा न रोक मोरि, इतनो बिनति कान दे ॥ जान दे० ॥ रङ्गपाल या गोकुलवारो, रजगिरि कराहिँ गई मैं वारो, नैं भुलोंगो यह पहिचान, लाज दान दे ॥ जान० ॥

छांड दे छैलवा, पयलवा, बाजैगो, जागति हैंननदिया ॥ छाड दे ॥ रंगपाल मान ले बिनति यह, धकधकात मोर हिया ॥ छांड दे छैलवा० ॥ ६० ॥

अब तुम जाव जहां निसि जागी बामल, तो सों नहिँ बोलोंगी ॥ पायन परति हमैं न सताओ, उनकौं को गरवां लपटाओ, रङ्गपाल घूँघट पट नाहिँ खोलोंगी ॥ अब तुम० ॥ ६१ ॥

कहियो राम राम मोहन सों ऊधो, और कौन बतिया अब ॥ रंगपाल उनको दसखतिया, बांचत हाय योग की पतिया; चाहति है यह बिहरि जान छतिया अब ॥ कहियो ॥ ६२ ॥

सब गई भूल अखी रे, मन मोहन को, वे व्रज की बतियां अब ॥ दै बिसवास करी पुनि घतियां, निठुर भये सबही भतियां अब ॥ सब० । ऐसई रही तपति दिन रतियां, तापर पठ्ठै योग की पतियां, रङ्गपाल खत होन चहत छतियां अब ॥ सब गई॥६३॥

पिय मोर छाय रहे मधुबनवां आली, नैना भये सवनवां ॥ सूनी लागति नगरी सगरी, भावत नाहिँ भवनवां ॥ छूते जो दृग तारे प्यारे ते अब भे हाय सपनवां ॥ रंगपाल क्यों धीर धरौं जिय, भयो जवाल जोबनवां ॥ ६४ ॥

सजनी री यह बन मालिया रोकत गैल कुचलिया ॥ स० ॥ रङ्गपाल कछु बस न चलत है, जुलमी जाहिर जालिया ॥ सजनी० ॥ ६५ ॥

बहुत भई अब मैं नाहिँ सहौंगी ॥ ब्रजनारिन धोखे जनि भूलो, नित यह गैल गहौंगो ॥ हारी बरजि बरजि नहिँ मानत, अब चुप नाहिँ रहौं गी ॥ रंगपाल ओ एक कहौंगी, गनि गनि लाख कहौंगी ॥ बहुत भई ॥ ६६ ॥

दरस बिन तरस रहीं अँखिया ॥ काह करूँ सखिया ॥ रङ्गपाल मोहिँ तलफत बीतत ज्यों जल बिन झखिया ॥ दरस ॥६७॥

झूँठो यह ललन पाग हू को पतिया ॥ आश्रो जाश्रो अब न बनाओ मोसे बतिया ॥ रङ्गपाल बिहरी जित चाहो, क्यों बिहरी नाहक मोरि छतिया ॥ झूंठो० ॥ ६८ ॥

## राग बहार।

आई बसन्त की नई बहार॥ फूले कचनरवा अरु अनार॥ आई०॥ राजित रसाल वर ललित मौर, गुंजरत भौंरगण झौर झौर, चहुँ पास चहकि सुमनन पलास, चौंथत चकोर भोरे अँगार॥ कुंजरत कोकिला कुंज कुंज, कुसमित द्रुम बेली ललित मञ्जु, मिल मिल प्रीतम सो भुज पसार, बलि रङ्गपाल बलि बार बार॥ आई०॥ ६९॥

## झपताला राग देवसाख।

भूलति न आली मुरतिया बलम को॥ बीती अवधि कौन बतिया सु आवन कि, पाई नहीं प्रेम पतिया बलम की॥ बिछुरत नहीं राखती कैसहू प्राण, जो जानती ऐसि घतिया बलम की॥ श्रीरङ्ग-नूपाल बीती बरष जात, लागी नहीं हाय छतिया बलम की॥७०॥

## झ० झझौंटी।

पिय पै चली बाल हंस कलरत जात। लहराति लाली सरस पगधरत गैल, मंजीठ को माठ मानहुँ ढरत जात॥ आनन्द को कन्द आननति है मञ्जु, वारन ते सुकना हजारन झरत जात श्रीरङ्ग जू पाल नख तालि तम तोम, निशिनाथ पर ज्यों नि-छावर करत जात॥ पिय पै०॥ ७१॥

रति रस उमगि बाल बिपरीत रांची। झनकार भूषण अपारन कियो छाइ, जय दुन्दुभी की सु धुनि दोह सांची॥ रति अन्त छपटी सिथिल पीयकी होय, आनद मगन तोय समता उमाचो। श्रीरङ्ग जू पाल मनमथ स्वर्णकार, मानहुँ कसौटी कनक-लीक खांची॥ रति रस०॥ ७२॥

दिनह्वो पगो, प्रेम पिय पै चली जाति । अँगराग भूषण बसन यों सजि अङ्ग, आभा उमगि अर्क आतप रली जाति ॥ यहई प्रमानत निहारत जोई सोइ, बन कुंज पुंजन दवागिनि छली जाति । बन देखि गुनिकै सुरी रङ्ग जू पाल, नभ ते सुबरसत सुमनकी कली जाति ॥ ७३ ॥

घन की घिरी घोर घहरति घटा है । कारी डरारी सरस सावनी रैन, लागो लजकि औ मनोभव सटा है ॥ स्यामा चली स्याम पै दुति दिपति अङ्ग, उघरत जहाँ पौन झूकन पटा है । औरङ्ग जू पाल तोहूं सु बलिहारि, जानौ परति छूटि छहरति छटा है ॥ घन को० ॥ ७४ ॥

पिय पै प्रिया प्रेम रस मैं पली जाति । भूषण बसन सेत जगमग हँसत मन्द, मानहुँ सुधा धार शशि ते ढली जाति ॥ बारन सो मुकता झरत सो चुनत चारु हंसावली सङ्ग आँनद रली जाति । मिलि चाँदनी मैं गई रंग जू पाल, अलिवृन्द सौरभ सहारे चली जाति ॥ पिय पै० ॥ ७५ ॥

## तिताला ।

अनैसी ये अलि चाँदनी राति । जदपि सीतकर करनि बिमण्डित तदपि लगति अति ताति ॥ स्वेत बरण अति कुटिल मलिन मन देखत हू न सुहाति । रङ्गपाल बिधि नहँक बनाई आवति मनहुँ अराति ॥ ७६ ॥

निहारत कुंजन सून प्रयङ्क । ह्वै गई बिकल अचानक लाग्यो जब बीछी को डङ्क ॥ सखि दिसि हेरि मरू कै बोली सुख भयो दिवस मवङ्क ॥ रङ्गपाल नहिँ अङ्क लगो पिय लागो अङ्क कलङ्क ॥ निहारत० ॥ ७७ ॥

निहारत कुंजन सूनो सेज ॥ बेधी गई सुमन सी गोरी कठिन मनोभव नेज ॥ निरखि अली दिसि रहो मौन गहि बँधी लाज की लेज। रङ्गपाल बिधु-किरिणि करद ते कतरन लगी करेज ॥ ७८ ॥

सखी री कौनि बलाय लगी। निरखत आजु श्याम को आनन रहि गइ ठाम ठगी ॥ रुकत नही नैनन ते क्यौंहूं अँसुआ नदि उमगी। रङ्गपाल उपचार कछू करि लगि अति सोच पगी ॥ सखी री० ॥ ७९ ॥

निहारत निसिदिन बदन हमारो। सजनो प्रीतम प्यारो ॥ निहारत० ॥ नैन उनींदेहुँ अरुण देखि पग घसत भाल सुकुमारो। रङ्गपाल सहिजात कवन पैं मान जरी दई मारो ॥ निहारत० ८०

पिय बिनु छिन मन धीर न धारत। बिपुल कल्प बीतत पल पारत ॥ पिय० ॥ रङ्गपाल हिय हार बिहारत तौपि आलि हिय हार बिहारत ॥ पिय० ॥ ८१ ॥

मिल मिल राधे श्रीब्रजराजहि ॥ साधे मान इतो किम काजहि। रङ्गपाल नातरु पछतैहै कर मल मल बीते ऋतु राजहि ॥ ८२ ॥

ग्रीषम कहर कसालहि मेटहु ॥ चलि बलि आँनद अखिल समेटहु। रङ्गशील पाला पुतरी ज्यों श्रीराधहिं हरि भुज भरि भेटहु ॥ ग्रीषम० ॥ ८३ ॥

चलु चलु राधे मालति कुञ्जन ॥ मधिकृत मधुर मधुर गञ्ज गुञ्जन। रङ्गपाल पिय सरद निशौंधि ले भरि अङ्क लूटि सुख पुञ्जन ॥ चलु चलु० ॥ ८४ ॥

तो सिर लाल बाल को टीको ॥ आभा उमग अलौकिक सखि लखि सौतिन को मुख फीको ॥ तो सिर बाल० ॥ पिय सों लहि रति जङ्ग विजय करि आयो सखि जन जी को । रङ्गपाल सम यो बलि नीको यह विजयादसमी को ॥ तो सिर०

विकसित घन बन मञ्जुल मल्लौ । सरल लता द्रुम वंजल बल्लौ ॥ रङ्गपाल रमपति रस रांचत मधु पंल्लौ गुंजरत मतल्लौ ॥ त्रि० ॥

हा मम जीवन जीव किते हो ॥ कब विरहानल तपन रिते- हो । हा राधे हा निसिपति-बदनी कै अब ऐसहि हाय बितैहो ॥ धिक धिक तो बिन प्राण रहै क्षण हा कब लोचन कोर चितै हो । रङ्गपाल हरि विकल बदत इमि द्रुत मिलि मानि कुशल भनि तैहो ॥ ८७ ॥

स्याम तुव सौंहन रेख खचावैं । क्यों इहि भांति अधीर ह्वै जियत नहिँ झूठी समझावैं ॥ अबहीं जाय मनाय पिया को प्रमुदित तुमै मिलावैं । रङ्गपाल तब सखा रावरे जग सांचे कहवावैं । ॥ स्याम० ॥ ८८ ॥

हा हा मिल मिल रूप अगाधे । राखन योग नैन पुतरिन मैं तासों का रिस साधे ॥ हा हा० ॥ विष्णु, स्वयम्भु शम्भु सह सानन सुर मुनि धरत समाधे ॥ तदपि लहत छन छांहन तेहि तूं प्रेम डोर कसि बांधे ॥ तनकौ रहो सँभार तनक नहिँ मेटि मान हठ बाँधे । बिहरत हिय मम चेति पाणि जब पटकत कूहि हा राधे ॥ नहिँ जानिय कहँ परो मुरलिया जिहि जिय लौं अबराधे ॥ रङ्गपाल क्षण दिवस बिछोहे ह्वै गए मोहन आधे ॥ मिल० ॥ ८९ ॥

भई हौ नोखौ रूमनहारि। मानति नाहिँ मनाये क्योहूं रही निठुरता धारि॥ भई०॥ बिनवत रहि निसि रह्य शेष अब हा हा करि गइ हारि। मिल मिल मतक मसूअन मदिहै अपनो चूक बिचारि॥ पायन परत लाल सिर टीको फीको परो निहारि। रङ्गपाल जू अबयाहू ते का-न्नियो चहति उ-चारि॥ भई हौ नोखौ॥ ९०॥

सांचे रसिक शिरोमणि प्यारे। सुनत हुती मैं बहु दिवसन सो नैनन आज निहारे॥ भोर दरस दै दूर किये सब तनमन ताप हमारे। रङ्गपाल छवि हग अब रोहति जावक तिलक सवारे॥ ९१॥

अँगुरिया मोर छतिया मैं छुवाई। कहत कि गेंद हिरानो तनो तल राखि ताहि छपाई॥ दै दै बेग जान तब देहौं तूं चोरटी लुगाई। रङ्गपाल यह कैसो अनैसो तूं पहचानति माई ?॥

अरी यह बांसुरिया को बान। सुनत बेधि उर जात बाम ज्यौं भूलत तुरत अपान॥ मेरे जान पूतना को विष राखो जो करि पान॥ रङ्गपाल खुई डारि श्रवन मग लेन चहत अब प्रान॥ ९३॥

बँसुरिया कैसी बजाई स्याम। तनक भनक सुनि बिबस गई है भूली तन धन धाम॥ बँसुरिया०॥ सुरति न परति लोक मरयादा बेद बानिह्ह आम। राखि सकै अब कौन सखी री लाज सांझ सो काम॥ संक बिहाय जाय मिलिहैं अब लोग करौ बदनाम। रङ्गपाल बरबस मन फँसिगो कठिन प्रेम के दाम॥९४

सखी मेरे प्यारन मुकुट कुवाय। सौ सौ हा हा खाय॥ सखी०॥
कोमल कमल समान पानि करि सम्पुट सौस नवाय।
विनय करत पुनि लेत बलैया बार बार बलिजाय॥
घसत भाल पग टीको फीको, परत न नीठ लखाय।
पीलो वसन देत करि आलो नैनन जल बरसाय॥
ठाढ़ो रहत गैल गहि मोहन मम जोहन चित चाय।
आपु न लेत कलंक अंक सिर मोहूं देत लगाय॥
हारी बरजि बरजि सब भांतिन एक न चलत उपाय।
कहन कि पास नहीं मन मेरो काहि रही समझाय॥
प्रेम फांस फँसि लह्यो कवन सुख सलभ मीन मृग न्याय।
जानै बिथा न दूजो कोई जा उर लागे घाय॥
यदपि कराहे ते घायल की वेदन नाहिं सिराय।
तदपि रहो ह्व जात न क्योंहू बिना पुकारे हाय॥
हौं बलि मोंको इतनेई पर तोष ल्याईबो आय।
तूं जानै मम कारण याकी होति दशा इहि भाय।
प्राण प्राण तूं हित मानै नहिँ तौ पुनि कहा वसाय।
पर मोहिँ तोपर प्राण वारने लियो ठीक ठहराय॥
बोलत हुती कुटिल करि भौंहैं निति प्रति हौं अनखाय।
पै अब मेरहु हियो मैन लौं गयो अरी पघिलाय॥
समझत वाको दशा नैकहु अब नहिँ धीर धिराय।
वाही की सी भई गति मेरिहु लियो प्रेम हिय छाय॥
होनी होय सु होंय सखी री अब न कछू परवाय।
रङ्गपाल हठि ललकि लेहुंगो अब छतियां लपटाय॥ सखी०॥

सखो री का समझाय रहो। मन तो पास नहीं है मेरो. माने कौन कहो॥ सखो रे०॥ लोक वेद की आन कानि सब अँसुवन साथ बहो। रङ्गपाल अब तन मन पूरो स्याम सनेह सहो॥ सखो री का०॥ ९६॥

स्याम सो कैसे के मुख मोरौं। मन रँगि गयो स्याम रँग सांचों अब कहु केहि रंग बोरौं॥ स्याम०॥ हित सिख तदपि कहै न कछू अब सजनी तोहिँ निहोरौं। रङ्गपाल यह लागि सनेहिया हाय दई किमि तोरौं॥ स्याम सो०॥ ९७॥

सखी फुलवरिया सूनि परी॥ निरखत दुसह दवागि विरह की छतिया जाहि जरी॥ सखो०॥ प्रीति पिछानि हुतो यहि बेरियां आवत छैल अरी। जिय समुझावत हुतो झांकि कछु झझरी ओर दरी॥ जान्यो नहिँ परत आज धौं काहे सुधि बिसरी। रङ्गपाल कछू की परी मोहिँ सो कछु तकसोर खरी॥ सखो०॥ ९८॥

हरि को दृग पुतरिन करि पैयत। तौ सखि नेक अघैयत॥ हरि०॥ दैहो दये नैन ताहू पर पल न परत दुख पैयत। रङ्गपाल जो बस होतो तौ बिधिहि कुलाल बनैयत॥ ९९॥

सखो री अमवन बौर लगे। कुसुमित लता लगीं लहराने पौन झकोर लगे॥ कोकिल कीर कपोत पपीहा करने शोर लगे। रङ्गपाल सुधि छोड़ि सौति हिय प्रीतम मोर लगे॥ सखो रे०॥ १००॥

जो कहुं नन्दलला चहियो हो॥ पथिक सुरति गहियो हो। रङ्गपाल दै बीरहु यह मम् ले गोपाल कहियो हो॥१०१॥

पथिक हो इतनो अरज सुनैहो । प्राण पिया पहँ जैहौ ॥ पथिक० ॥ पालागियत इहा निज दिलि ते कछु औरहू सम-झैहो । आवन कहि गये अजहुं न आये अब कब लग तरसैहो ॥ आये बसन्त कछू न बनैहै जो अजहूं नहिं ऐहो । रङ्गपाल तो आय बहुरि ब्रज का फिर खाक उड़ैहो ॥ पथिक ॥ १०२ ॥

ऊधो योग सिखावन आये । स्वाती बुन्द बरजि चातक-मुख छारहि नावन आये ॥ जलते काढ़ि मीनकुल संकुल अगिनि ब-सावन आये । रङ्गपाल ब्रज जरी तियन को खाक उड़ावन आये ॥ ऊधो ॥ १०३ ॥

ऊधो कब ऐहैं ब्रज माधो । बिन देखे वह रूप माधुरी कल न-परत पल आधो ॥ योग युगति भावै जाको सो निज पट छोरन बांधो । रङ्गपाल हम तो तन मन सो एक प्रेम आराधो ॥ ऊधो कब० ॥ १०४ ॥

सखो लखु येई यशुमति-नन्द । वारिय कोटि चन्द को शोभा आनन आनदकन्द ॥ बरबस लेत फसाये हियरो जुलुफ मनोभव-फन्द । रङ्गपाल सुकुमार सुभग तन कहँ वह झख ध्वज मन्द ॥ १०५ ॥

निरखु सखि राजित नन्दकुमार । स्यामल तन सुकुमार सलोनो वारिय कोटिन मार ॥ तिरछी चितवन मैन बाण ज्यों करत हियो तकि पार । रङ्गपाल छबि बदन बिलोकत रहत न तनहिँ सँभार ॥ १०६ ॥

यसोदा तेरो कान्ह बड़ो रगरो । नित प्रति रोकि रहत मग री हठि फोरि देत गगरो ॥ अञ्चल झटकि उघारत घूँघट

चरचा चहुँ बगरो । रङ्गपाल बरजहु को तजिहैं अब गोकुल की नगरी ॥ १०७ ॥

भलो सुत कीनो लाड लडाय । बरजति नहिँ नँदरानि गैल गहि नितहिँ करत लँगराय ॥ राज करहु अब हम सब बसिहैं कतहुं अपर पुर जाय । रङ्गपाल निज गोकुल नगरी लीजै ठौंकि बजाय ॥ भलो सुत कीनो० ॥ १०८ ॥

निरखु सखि श्रीराधे ब्रजबोर । सरद चन्द अरबिन्द बदन बर हांस छटा रह छोर ॥ निरखु० ॥ चटकीली चूनरी चम्पई उत पियरो पट बोर । भूषण सकल सुदेव बैस लसि सोभा सिंधु गँभीर ॥ निरखु० ॥ गौर स्याम अभिराम अङ्ग दुति लखि रति काम अधीर । रङ्गपाल मरकत गिरि मानहुँ जातरूप जंजीर ॥ निरखु सखि०॥ १०९ ॥

महरि अब निपट भई नकवानि । परो अरी यह तेरे सुत की निपट अनैसी बानि ॥ महरि० ॥ गोरस चोरि खात ढरकावत भाजन डारत भानि । बहुरि रोकि मग झटकत अञ्चल करत लाज की हानि ॥ तूं बरजति नहिँ नेकु भुकति बरु उलटी भौहैं तानि । रङ्गपाल अब ब्रज तजि देहैं राज करहु नँदरानि ॥ महरि० ॥ ११० ॥

चले गए तनिएक झलक दिखाय । बिहँसन जदुआ नाय ॥ चले गए तनि० ॥ रङ्गपाल सखि फिर चितवन को नैनन लगनि लगाय ॥ चले गए० ॥ १११ ॥

संदेसवा इतनो कहियो जाय । हा हा लगियत पाय ॥सँ०॥

तन मन भई रावरी ब्रजतिय आप लियो अपनाय। मारी परति बिचारी तै सब अब मधुकर सों हाय॥ दे अधार मझधार बांह गहि बोरब उचित न आय। रङ्गपाल यह फबत न तुम पै मधुसूदन कहवाय॥ ११२॥

## दादरा ( खिमटा वा अद्धा )

फैली जुलमी जवान जुन्हैया। अन्तक सी बैरन बसन्त की बिष बेदन बगरैया॥ देखत दृगन जरावति तनमन कैसी करूं अब दैया। रङ्गपाल अब धीर धरों क्यों सखि बिन कुंवर कन्हैया

हमरी सुरतिया न भूल्यो हो परदेसिया बालम। चार दिना की बहार संयोगवा गहकि गुलबवा फूल्यो हो॥ पर०॥ अब मन भौंर ठौर नहिं पावत सोच भौर झखि भूल्यो हो॥ पर०॥ रङ्गपाल इक बिरह कांट अब हाय हिया बिच हूल्यो हो॥ परदेसिया॥ ११४॥

कोउ परदेसिया से प्रीति करै ना। मारत यकदिन बिरह कटरिया चार दिना को मीत॥ नाहकहीं जिय जरनि बेसाहब नहिं सयान की रीत। रङ्गपाल जानत दुख याको जाके सिर गइ बीत॥ करैना॥ ११५॥

नयनहीं से मिलि जा एक देयां। हा हा परौं तोर पैयां॥ नयन०॥ निशिदिन हिय तरसत बरसत दृग धीर धरों कैसे दैया। रङ्गपाल तन प्राण रहैंगे तोहि बिन कौन उपैया॥ नयनहीं से मिलिजा०॥ ११६॥

चले गये हाय पिया मधुबनवां, चले गये। आप न आये

पठाये न पतिया नैना भये री सवनवां ॥ बिदरि जान चाहत हिय सजनी निरखत सूनो भवनवां । रङ्गपाल मन मथत मदनवां भेरे जवाल जोवनवां ॥ चले गये ॥ ११७ ॥

## खिमटा—अन्य ।

तरसत है जियरा, प्यारे बिना । चैन परत नहिँ एक छिना ॥ तरसत० ॥ रङ्गपाल छतियां छपटैबे ऐहैं भला कबौं उहश्रो दिना ॥ तरसत है० ॥ ११८ ॥

अधरतिया पपिहरा बोले रे । नाहक छतिया छोले रे ॥ अधरतिया० ॥ रंगपाल हठि बिरह अगिनि को हाय खजाना खोले रे ॥ अधरतिया० ॥ ११९ ॥

अरे निरमोहिया बालमां रे । तलफि तलफि जिय जात दरस बिन याही लिखा था भाल मां रे ॥ तब तो कहे छन बिछुरब नाहीं अब क्या हुआ तेरे ख्याल मां रे । रङ्गपाल फिर काह फंसाए हाय प्रेम के जाल मां रे ॥ अरे० ॥ १२० ॥

सनेहिया काहे के लगायो यार । जो मन मांह हुती तोरन को काहे कियो करार ॥ सियरी कियो ललकि लगि जामें करि के हेत अपार । रंगपाल बलि ता छतिया में अब बास करत दरार ॥ सनेहिया० ॥ १२१ ॥

गई रात बीत, नहीं आये बालम । सजनी होति अन्त दुखदाई निरमोहिया की प्रीत ॥ बुन्द परत ढहिजात छनक में ज्यों बालू की भीत । रंगपाल जानत मन तरसत जरि जावै यह रीत ॥ १२२ ॥

कवन सँग जागी रात प्यारि। अंजन अधर भाल पर जावक नैन अरुणता पागी ॥ बिथुरी जुलुफ मरगजे बागे हार हिये बिछ- लागी। रंगपाल उर दाग बलय को दन्त कपोलन लागी ॥ कवन सँग जागी० ॥ १२३॥

हमैं न जगाओ जाओ जाओ। नाहँक आय भोर सौ हैं करि अब जिनि जरत जराओ॥ इत करि बिरम आप प्यारिहु कौं क्यों तरसौ तरसाओ। । रङ्गपाल पायन परियत हैं उनहिँ की गरवां लगाओ ॥ हमैं ॥ १२४ ॥

हमै तरसायो नहिँ आयो । कहँ निसि सुख सरसायो ॥ रङ्गपाल कवनी नवेलि पे प्रेम सुधा बरसायो ॥ हमै ॥ १२५ ॥

गले लगि जाओ आओ आओ। अब जिनि हिय तरसायो ॥ गले लगि० ॥ रङ्गपाल बरसाय प्रेम रस जियरा जरत जुड़ाओ ॥ गले लगि ॥ १२६ ॥

इते अब क्या हरि हेरत हो। लै लै नाम सखी ललिता को बरजत बंसी टेरत हो ॥ क्यों सुनि मान करै नहिँ प्यारी रसिक सुजानप गेरत हो। रङ्गपाल करि चोरी आपही आप ढिँढोरा फेरत हो ॥ इते० ॥ १२७ ॥

अब कहँ जावे छयलवा रे मोसे नैना लगाय । नेक चितै तिरछी चितवन सों कीनो करेजवा में घाय रे ॥ मन मुसकान मोहनी लाड़ी हिय हरि लीनो हाय रे । रङ्गपाल छन एक न छोड़ौं चह जिय जाय तौ जाय रे, मोसे नैना लगाय ॥१२८॥

लागी सनेहिया न छूटे रे, जियरा चाहैं जाय । अङ्ग भरौं

निरशङ्क बङ्क ये कियो करैं सबही चवाय रे ॥ लाज निगोड़ी ते काज न राखौं अब डरै मेरो बलाय रे। रङ्गपाल जो प्राण-प्राण को कैसे बिसारौं हाय रे, जियरा चाहै जाय ॥ १२९ ॥

बँसुरिया बाजी साँवरे की। तनक भनक सुनि मेरे मन की हो गइ गति बावरे की ॥ बिन देखे वहि कुशल न बूझहि सखिया तन भांवरे को। रङ्गपाल अब जाय मिलौंगी नाम धरैं गावँरे की ॥ १३० ॥

मुरलियावाला, सांवला रे। दृगप्याला छकि छाक छका के कर दिया मन मतवाला ॥ मन मुसकाय निहारि तिलोके बौरी सो कर डाला। रङ्गपाल बसि आप हिये हटि लाज निकाला दिवाला ॥ मुरलियावाला० ॥ १३१ ॥

लागी कैसोधौ स्याम नजरिया। ठगि रही ठाम दाम बिन सजनी बिकि गइ बीच बजरिया ॥ ह्वै गई बिवस सयानप बिसरो टुटि गइ लाज लेजरिया। रङ्गपाल तिहि चैन परै क्यौं जाके इस्क अजरिया ॥ लागी० ॥ १३२ ॥

हमारो अँखिया एरि सखिया। ह्वै मेरी मेरे बस नाहीं स्याम रूप रस भखियां ॥ अपनायो पियरे पटवारो सासँ मोर को पखियां ॥ रङ्गपाल हठ उरझि रही हैं लोक लाज डर नखियां ॥ हमारो० ॥ १३३ ॥

कवन माखो बूटी, भइँ तोरे बस मैं। मन मानिक गो लूटो ॥ कवन० ॥ रङ्गपाल अब तो परै बारी लोक लाज सब कूटो ॥ कवन० ॥ १३४ ॥

भई मैं अब तो बदनाम ग्वैयां । होनो हुतो सु होय चकोरी [illegible] ॥ [illegible] सकुच ने कहुंना हियरे बरु छूटै तन धन धाम ग्वैयां । रङ्गपाल अब मन मोहन कर बिकि गइ बरबस बिन दाम ग्वैयां ॥ १३५ ॥

बिकानी स्याम पर बिन दामैं । वारि दिये जुत लाज साज सब तन मन धन अरु धामैं ॥ नेक न शङ्क बङ्क ये सजनी लोग करैं बदनामैं । रङ्गपाल बलि प्रीत करी हठि दैकै दोउ दमामैं ॥ बि० ॥ १३६ ॥

छैल तोसे अब तो गई लगि यारी । छूटन की नहिँ लाख करै कोइ बरु मारै तरवारी ॥ एक पलक बिन दरस तिहारे तरसति अँखियां हमारी । रंगपाल सब बिधि भइ तेरी तन मन धन सब वारी ॥ छैल० ॥ १३७ ॥

नयनवां अब तोहि सन अनुरागी । बरबस बिवस किये इन हम की लोक लाज डर त्यागी ॥ आपहि जाय बँधाये बौरे बिहँसि प्रेम के धागी ॥ रंगपाल छल छन्द छाड़ि सब एक स्याम रँग रागी ॥ नैन० ॥ १३८ ॥

दिल बड़ा बेईमान सवलिया । श्रवन सुने पर दरसन के हित तरसत होत बिहान सवलिया ॥ दरसन ते फिर परसन के हित तलफत मीन समान सवलिया । रंगपाल जब परसन भो तब बिछुरत निकसत प्रान सवलिया ॥ १३९ ॥

लगे जब नैना काहू सेरे । वाही तन ठहरत हठि बरबस ठौर कुठौर गनैना ॥ रूप सुधारस पान करत पै नेकहुँ प्यास

बुझैना ॥ रंगपाल घरुझत मनहूँ सँग फिर कैसहु सरुझैना ॥ लागे जब० ॥ १४० ॥

जब नैना लगि जाय रामा । टोना लगत छोड़ाए छूटत इन को नाहिँ उपाय रामा ॥ देखे बिन तरफत निसिवासर मुखते निकसत हाय रामा ॥ रंगपाल दरसतहू तरसत है यह बड़ी बलाय रामा ॥ जब० ॥ १४१ ॥

नयनवां जब अरुझत हो यार । यतन बिचारि हजार करै कोइ नहिँ सरुझत हो यार ॥ ज्यों ज्यों कुबत चलत त्यों त्यों मन और जूझत हो यार। रंगपाल जाको सिर बीती सोई समुझत हो यार ॥ नयनवां० ॥ १४२ ॥

हमारा दिल नहिँ मानता हो यार । है दिलदार दरद मेरे दिल को, क्यों नहिँ जानता हो यार॥ तलफि तलफि जिय जात तरसत, क्यों नहिँ आनता हो यार। रङ्गपाल अपनाय निठुरता, क्यों अब ठानता हो यार ॥ हमारा ॥ १४३ ॥

## ताल-यति पुरबी।

अब तो भई रामा तिरछी नजरिया, बिछिया को डङ्क समान ए रामा ॥ अब तो ॥ जानत हायहु तो तब को यह नैना, विषम बिष बान ए रामा, रङ्गपाल बिन कल ना परत छिन केहि विध राखौं प्रान ए रामा ॥ अब तो ॥ १४४ ॥

## पुरबी तिलाना।

बिरहिनियां बावरि भैली रे। बौरे आम निहारि कोयलिया, तापर विष उगिलैली रे ॥ फैली हेरि जुन्हैया दैया बिनहीं

ज्वाल जरैलो रे०। रङ्गपाल कहि आज स्याम सो अब ब्रज को न बँचैलो रे। बिरहिनियां बावरि० ॥ १४५ ॥

अरुझि गए राम नैना रे। लोग करैं बदनाम ॥ रङ्गपाल रँगि गयो स्याम रँग, अब क्या किसी से काम ॥ १४६ ॥

कवन जादू डरले, रे सावलिया। हँसि के निहरले, हिया मोर हरले, लगनि अगिहि उर बर ॥ कवन जादू० ॥ रंगपाल बस करि बरबस घट, सोच सकोच निकर ली, प्रेम रस भर ले, रे सावलिया ॥ कवन० ॥ १४७

## ति० और दादरे में भी।

सिगरो कपट भरो तुव बतियां। केतो बेर लगाय सेज मम आयो हो तुम रतियां दृग पुतरीन बसाये प्यारी मोस करत हो घतियां॥ रंगपाल पिय अवध छयल हो उनहिँ को लाओ छतियां सि० ॥ ४८ ॥

प्यारो लेतिहूँ तेरी बलैया। हाहा जनक लली जिन रूसो पिय दृग तुव परछैंया॥ निरखत रहत रून्द मुख तेरो पिय चकोर को नैया। रंगपाल हिय ललकि लगाओ परियत है तुव पैंयां ॥ प्यारो ॥ ४९ ॥

मन्द हँसि कस चितयो मोरि ओर। रहि गइ तनक सँभार न बरबस हरि लीनो मन मोर॥ हे अवधश दुलारे प्यारे चहुँ दिसि फेरि ढिंढोर। रङ्गपाल बलि नाम धरौंगो अब जदुनागर तरो ॥ ५० ॥

## खिमटा।

हमें तरसाती, क्यों न आती। सपने में भी हाय कभी तो अ-सता जिगर जुड़ाती॥ जाती हो निम दे के दिलासे निर्वाहें धँ-मूठा दिखाती। रङ्गपाल कस में जो खाती उसको तो लाजों-जाती॥ हमें०॥ १५१॥

कर दिया हम को दिवानो, सखो श्याम हँस्ते हँस्ते। जाति रही मैं तो भोलो चली सोधे रस्ते रस्ते॥ रङ्गपाल दिल गोहर मेरा ले गया काहिर हाय दिरम पर रस्ते रस्ते॥ कर॥ १५२॥

बुरा है यारो, दिल लगाना। होती हैं मासूक बे वैफा उनके हाथ बिकाना। सङ्ग दिलों का याद मेरे पत्थर नाहक खाना॥ रङ्गपाल फसदामे मुहब्बत फिर कैसे छुट जाना॥ बुरा है यारो०॥

## तिताला।

मासूक बेवफा होते हैं। रहते हैं बेगम हरदम बस तान दुपटे सोते हैं॥ रहम यहो कहते हैं जब को दिल नाहक सब खोते हैं। रङ्गपाल आसिक रातो दिन अश्कों से तन धोते हैं॥ मासूक०॥ १५४॥

हुआ हूं ज़ख़्मी निगका मारा। मेरे दिल शहर बीच इश्क ने दे दिया अपना नक़ारा॥ ज़ीना है यह उसी बाम का चढ़ मंसूर पुकारा। रङ्गपाल आशिक हो किसने अपना बना न बिगारा॥ १५५॥

## ति० जाजवन्ती-वा देस।

अपने आशिक को तरसाना, ऐसा न चाहिये हो यार। हम को हर शब आह छिपाना, फिर चश्मों से खूँ बरसाना, तुम को

नाद बढ़ाना, ऐसा न चाहिये हो यार॥ वादे से ग़ाफ़िल हो जाना, तिसपर सौ सौ बात बनाना, जले को फेर जलाना, ऐसा न चाहिये हो यार। रङ्गपाल जिसको अपनाया, हँस कर अपने गले लगाया, उसको याद भुलाना, ऐसा न चाहिये हो यार॥ अपने आशक को०॥ १५५॥

## गज़ल-रागदेस।

हमें दामे मुहब्बत में, फँसाए जिसका जी चाहे।
बशरते क़स्द मेरी आज़माए जिसका जी चाहे।
न भूलें प्यार यकदम भी, किसी हालत में मुरदन तक।
बग़फ़लत याद से हम को, भुलाये जिसका जी चाहे॥
बराहे यार उल्फ़त में, हम अपना सर झुकाये हैं।
बस अपना शौक़ से खंजर, चलाये जिसका जी चाहे॥
अदब से रंगपाल अब तो, यह आदाबरुखसत का।
मुझे अपने गले से अब, लगाए जिसका जी चाहे॥ १५६॥

---

क्या हुए हैं ढंग सब उनके निराले, इन दिनों।
हो गये मेरे दिल के भी पुर जख़्म आले, इन दिनों॥
हैं हजारों तड़फते ज़ख़्मी बराहे इश्क़ में।
सुनते हैं फिरते हैं वे खंज़र निकाले, इन दिनों॥
हैं जो आती आशिकों के दिल पै लहरें बेशुमार।
खाते हैं महताब पर बल मार काले इन दिनों॥
आता है वह बाम पर रश्के क़मर वक्ते मुदाम।
खुल गए हैं आशिकों के बन्द ताले इन दिनों॥

देखता तिरछी निगाहे नाज से ऐ रङ्गपाल।
चलते हैं लाखों गिरफ़ारों पे भाले, इन दिनों ॥ १५७ ॥

इश्कने क्या कैफियत मुझ पर गुज़ारी इन दिनों।
आशिकों में हो रही नामें शुमारी इन दिनों ॥
पी लिया जामे मुहब्बत मस्त अब दिल हो रहा।
आँखों से जाती नहीं मै की खुमारी इन दिनों ॥
खिल रहे गुंचः चमन् न खिजां का नामी निशां रहा।
सेदा बुलबुल हो रहे कैसी बहारी इन दिनों ॥
खत कहीं हाले जवानी है कहीं खुद गुफ़्गू।
क्या मजे से हो रहा यह रस्म जारी इन दिनों ॥
करते हैं बदनाम हमको जा बजा बुल्दः के लोग।
मुस्कुराते देखकर सूरत हमारी इन दिनों ॥
करते हैं फजले इलाही कद्र मेरी मिहरबाँ।
चलती हैं दिल पे रकीबों के कटारी इन दिनों ॥
कितने डाले दरो छिद्रों दर पर्दे मेरे रकीबों ने।
हो रही है इस कदर की खबरदारी इन दिनों ॥
रहते हैंगी फिराग़ में मेरे रातो दिन तो भी रंगपाल।
क्या मजे से हो रही दीदारदारी इन दिनों ॥ १५८ ॥

अबे, बख्ते वर अपनी यार को जैव हम बुलाते हैं।
दिखाते हैं करामत गोर से मुर्दे जिलाते हैं ॥

खिजां पर बाज होती है जब आती नौबहारी है ।
हरंगी ज़र्द लाती गुल अशर्फ़ी रश्क खाते हैं ॥
हरे दिल सब के करते हैं अजर सब्ज़ो सजावट से ।
मिहर्वाँ खोल दरवाजे चमन् ज़िल्वा दिखाते हैं ॥
अशौके रङ्गपाल अज़हद मज़े में बस हुये सैदा ।
जबां औरो से बुलबुल क्या मुबारकबाद गाती हैं ॥ ५७ ॥

# अथ बधाई ।

## तिताला ।

बजति नँद मन्दिर अनँद बधैया जसुदाके जनमे कन्हैया ॥ बजति० ॥ नाचत गावत लोग लुगैया, जाचक लहत बसन मणि गैया, रङ्गपाल लखि सुख सुखदैया, मुदित रोहिनी मैया। ॥ बजति ॥ १ ॥

## स्थाई-राग हम्मीर ।

बजति बधाई ॥ नन्द महर घर जशुदा सुत जाई ॥ बजति० ॥ नाचत गावत रँग बरसावत ब्रज की लोग लुगाई । रंगपाल आनन्द मगन मन सुमन सुमन झर लाई ॥ २ ॥

## तिताला ।

आज ब्रज बजति बधाई हो, जनमे यशुदा सुत सुखदाई ॥ ब्रज ॥ नाचत गावत सब नर नारी, बिहँसत सु परस्पर रँग-डारी, दुन्दुभि दे बरसत सुमन देव, जै जै धुनि छाई हो ॥ आज ॥ थपि कलशध्वजा बन्दनवारी, सब द्वारनि किये चित्रकारी, प्रति

घर घर मङ्गलचार होत, अनँद न समाई हो ॥ आज० ॥ जन रङ्गपाल जू बलिहारी, तजि औ यशुदा को यक सारो, अरु यक धोतो निज नन्द, अपर सब वस्तु लुटाई हो ॥ आज व्रज० ॥ ३ ॥

अली तुम सुनो कि नाहिं अबै। तेरी सौं हौं तो ऐसी सुधि पाई आज कबै ॥ भादौं कृष्णाष्टमी अर्धनिसि हर्षण योग जबै ॥ रङ्गपाल के स्वामि नन्द घर प्रगटे आय तबै ॥ अली० ॥ ४ ॥

होत व्रज घर घर मङ्गलचार। चलि बलि जन्म सुफल करिये अब समयो सुखद अपार ॥ होत० ॥ हर्षण योग अर्ध निसि भादँव कृष्ण पच्छ बुधवार। श्रीयशुदा रानी सुत जाये नन्द महर आगार। थापि पल्लवित कलस पताके बाँधी बन्दनवार ॥ गावति युवति सोहिलो नर्तक नाचत हारनि हार। डगर नगर अरु बार हरद दधि मांची कीच सुढार ॥ जाचक भए अजाचक बाजन बाजत विविधि प्रकार। दे दे दुन्दुभि दौह देवगण बर्षाहिं सुमन क-तार ॥ रङ्गपाल व्रज उत्सव शेषहु कहि नहीं सकत हजार ॥ होत व्रज० ॥ ५ ॥

## झपताला।

बाजत अनन्द बधाई सखो आज नन्द-मंदिर में ॥ अष्टमि असित भाद्र रोहिणी अरध रैन यशुदा के जन्मे कन्हाई। गावत नचत रंग बरसंत सुनर नारि आनन्द अँग न समाई ॥ बलि रङ्ग-जूपाल बकसत महर हर्षि मणि पट पुरट उरद गाई ॥ सखी आज० ॥ ६ ॥

बजे, नन्दघर आज माई बधाई ॥ बजे ॥ नचत नर्तक विपुल गाय शुभ सोहिलो, श्रीयशोदा के जनमे कन्हाई ॥ बजे ॥ हेरि

लालन बदन मुदित मन रोहिणी, तोरि तृण वारती कोन राई ॥ बजै० ॥ धाम धाम निसु ब्रज होत मङ्गलचार थापि ध्वज कलश तोरन तनाई ॥ बजै० ॥ लोक तिहुँ नारि नर मुदित जाचक निकर, पुरट, पट, धेनु, हय, दुरद पाई ॥ बजै० ॥ रङ्गजूपाल दे दुन्दुभी हरषि हिय, बरषि सुर सुमन धुनि जयति छाई ॥ बजै नन्दघर० ॥ ७ ॥

बाजति अनन्द बधाई मंदिर में। यशुदा के जनमे कन्हाई ॥ मंदिर में० ॥ नर्तक नचत गाय शुभ सोहिलो मंजु, सौरभ चहूँ घा सिंचाई ॥ पल्लव ललित थापि मङ्गल कलश केतु, मोतियोंदो तोरण तनाई ॥ बरसत परस्पर ललकि ग्वाल गण धाय, केसर, हरद, दधि, मिलाई। हादी मुखो आध करिके उठे नन्द, जै जैति धुनि देव छाई ॥ याचक चले है अयाचक अखिल हर्षि, मन भावती बस्तु पाई। हरि जन्म उत्सव सहस रंग जू पाल, शेषहु सकत नाहिँ गाई ॥ मंदिर में ॥ ८ ॥

## खिमटा।

जनमैं कुँवर कन्हाई माई आवो देखने चलो। केसर दधि, हरद कीच, माचो ब्रज गलिन बीच, सौरभ शुचि बीथिनै सिंचाई ॥ माई० ॥ थापे ध्वज कलश मंजु, बार नारि नटक पुंज, नाचत शुभ सोहिलो सुगाई ॥ जानन चढ़ि सुरस बाल, बरसत नव पुष्प माल, उरमें आनन्द न समाई। याचक लहि मुकुत लाल, आशिसैं सु है निहाल, नन्द द्वार बाजतो बधाई ॥ ब्रज को आनँद र-साल, कौन कहै रङ्गपाल, यसुदा के भाग को भलाई ॥ माई० ॥

बाजती ब्रज मे रे बधैया । भादौं व स्याम अर्धनिसि अष्टमि जनमें कुँवर कन्हैया ॥ बधैया ॥ सुतमुख निरखि यशोदा रानी पुनि २ लेति बलैया । राई लोन वारि तृण तोरति मुदित रोहिनी मैया ॥ बरषि बरषि सुर सुमन सराहत धनि ब्रज लोग लुगैया । रङ्गपाल कहि सकत न शेषहु नंदजी को भाग भलैया ॥ बधैया बाजती० ॥ १० ॥

## ति० ।

जनमे कन्हैया सखो सुखदैया सो ब्रज मे बाजे रे बाधैया । सुत मुख निरखि यशोदा रानी लेति बलैया प्यारे ॥ बाधैया ॥ राई लोन वारि तृण तोरति रोहिनि मैया ॥ रे० ॥ रङ्गपाल धनि नन्द रैया की भाग भलैया ॥ रे० ॥ ११ ॥

चलैं सखि नृप दसरथ के धाम । देखन छवि अभिराम ॥ चलैं० ॥ रङ्गपाल सुत जाये कौशिला, आनँद आठो याम ॥ चलैं० ॥

## मकसूदावादी-वा-ति० ।

रे, आलो, नृप दसरथ घर आओ चलैं, बाधैया बाजि रही ॥ रे आलो० ॥ अदभुत चारि सुअन प्रगटे री, मानहि बात सही ॥ रे आलो० ॥ तिहुँ पुर आनँद मगन नारि नर, निधि ज्यों रङ्क लही ॥ रे० ॥ रङ्गपाल नृप भाग भलाई, कापै जाति कही ॥ रे० आलो० ॥ १२ ॥

## नौबत-वा-ति० ।

नृप दसरथ आगार, बधावर लै चलो रे ॥ शुभ घरि प्रगटे चारि, सुअन मनभावने, घर घर मङ्गलचार ॥ बधावर० ॥ युवती जन आनन्दि सोहिलो गावहीं, नृत्यक नाचहिँ द्वार ॥ ब-

धावर० ॥ रङ्गपाल कहि जयति, देव दै दुन्दुभी, बरषहिँ सुमन अपार ॥ अधावर० ॥ ॥ १४ ॥

### चैता की चाल में ।

बाजे बधैया हो रामा; अवध, नृप घर रे ॥ बाजे बधैया० ॥ रङ्गपाल कौशल्या जाए, अरे लालन सुख दैया हो रामा ॥ अ-वध, नृ० ॥ १५ ॥

### दादरा ।

बेदन सहौं कैसे आहि दैया ॥ सासु कहति बहु नेक धीर धरु है हैं सुत सुखदैया ॥ बे० ॥ ननद हँसति मुख मोरि दरद यह को बूझै बिन मैया ॥ बे० ॥ रङ्गपाल शुभ घरि भे लालन बाजन लागि बधैया ॥ बेदन० ॥ १६ ॥

॥ इति—बधाई ॥

---

# ॥ अथ बनरा (सहानो) ॥

### तिताला ।

बना यह अजब अनोखो भाई ॥ देखत दृग न अघाई ॥ बना यह० ॥ धनि वह नन्द महर को रानी जिन ऐसो सुत जाई । निति प्रति लखति नेन भरि शोभा धनि ब्रज लोग लुगाई ॥ हम-हूँ सब भईँ आजु धन्य सखि पूर्व पुन्य अधिकाई । बिधिहु धन्य वह भयो तिहूँ पुर अनुपम रूप बनाई ॥ राधा भाग भलाई कहै को जिन ऐसो वर पाई । रंगपाल ब्रज राज बने पर गो बिन मोल बिकाई ॥ बना यह० ॥ १ ॥

बना सखि बिहँसत मन हरि लेत। चितवत चारु तिरीछे नैनन हाय कहर करि देत ॥ नन्द नगर ते मनहुँ पान दे, पठए श्री झषकेत। रङ्गपाल बरसाने वारिन कातल कारन के हेत ॥ बना सखि० ॥ २ ॥

बनरा नन्द नगर ते आयो। निरखि दृगन भरि रूप माधुरी जीवन को फल पायो ॥ बिधि प्रपंच मैं कतहुँ आज लौं दूजो नहिँ ठहरायो। रङ्गपाल ताते कहियत हैं बिधि कोउ और बनायो ॥ बनरा० ॥ ३ ॥

## दादरा।

बना बनि आयो नन्दलला रे। मणिमय मौर लरैं मुक्ता की भूमत झमकि झलारे ॥ मन मुसकान मोहिनी डाली मन बुधि हाय छलारे। जालिम जुल्फ कातल कारी सीं घायल सब अबला रे ॥ कोटि मनोभव रूप माधुरी तुलति न एक कला रे। बरसाने मग अकुलात बिहात कलप जनु सजनी परत पला रे ॥ बरसाने ते नन्द नगर जब जैहैं हाय चला रे। रंगपाल तब कैसे रहैगी यहि तन प्राण भला रे ॥ बना० ॥ ४ ॥

## दादरा और ति० भी। बनरा ॥

कछू दिन रहि जैये ससुरार। ललन चलन चरचा सुनि हियरा धक धक होत हमार ॥ परत एक पल अन्तर मानहुँ बीतत कलप हजार। रङ्गपाल अलबेले बने बलि हाहा प्राण अधार ॥ कछू दिन० ॥ ५ ॥

बने मोरि सुरति बिसरि जिनि जैहो। अबती सरस नेहुँ को नातो पालागियत निबैहो ॥ सब बिधि हीन दीन अबला गुनि देत

खेत सुधिरैहो। टूरन कछु बरसाने गोकुल निति प्रति पत्र पठैहो॥ भई भूव चहति बावरी प्यारे कौनहु यतन बतैहो। विहरि जान चाहत हिय समुझत निजपुर ओर सिधैहो॥ कैसहु तौ मन धीर न आवत अब कब बदन दिखैहो॥ रंगपाल हा हा ब्रज बनरे जियरा जरत जुड़ैहो॥ बने०॥६॥

## खिमटा।

ब्रज बनरे की सुरतिया रे कसकै दिन रतियां॥ वह चितवन वह रूप माधुरी वह बिहसनि वह बतियां रे॥ जबते गये सखि नन्द नगर को बिरह तपति नित छतियां रे॥ रङ्गपाल मन मानत नाहीं अब देखब किहि भतियां रे॥ कसकै॥ ७॥

मैं तोहिं पर वारी अवध बने। हरि लीनो हठि मति गति सारी बिहँसनि कहर गुजारी॥ अ०॥ तलफत परी हिये हनि मारी चितवन अजब कटारी॥ अ०॥ रङ्गपाल जुलफन तलवारी हाय कतल करि डारी॥ अवध बने०॥ ८॥

## ति० सिन्दूरा।

बनरा अजब अनोखो यार। स्यामल तन सुकुमार॥ बनरा०॥ भूषण बसन सुदेस बेस लखि वारिय कोटिन मार। रंगपाल दृग लाहु लूटिये होत हार को चार॥ ६॥

सखी बनरे पर वारी रे, जिय चहत ललकि लगि जाउँ गरे॥ बनरे पर वारी रे०॥ मकराकृत कुण्डल फरकीली, मणि जटित मौर अति चटकीली, सौरभित सरस बागो पीली, जगमग जरतारी रे॥ सखी बनरे०॥ गजरो गज मोतिन को बिलसै, बति०।

जनु अम्मृत धार खसे, करि देत कहर जब मन्द हँसे, चितवन मन हारो रे ॥ सखी० ॥ लखि रङ्गपाल त्रण टलि डारो, वर बस नारी यहि पुर वारो, किय घायल हायल सखि सारो, भुलफन तरवारो रे ॥ सखो बनरे पर वारो ॥ १० ॥

## राग देश-ति० ।

बनरा रे !!! आयो अलबेलो आलो, बिहँसत मन हरि लेत ॥ बनरा रे ॥ आनन अलकैं इमि छवि छलकैं, जनु शशि रसहित अहि सुत ललकैं; बेन मोहनी डालि हरत चित चेत ॥ बनरारे ॥ निरखि अनूपम रूप निकाई को न जात बिन मोल बिकाई, वारि डारिये कोटि कोटि भख केत ॥ बनरा रे ॥ रङ्गपाल भौंहैं शुभ यन्त्रे, मनमथ लिखे बसी कर मन्त्रे, निरखि नयन के कोर, कतल करि देत ॥ बनरा रे ॥ ११ ॥

## ति० झझौटी ।

बनरा यह अजब सलोना री न हुआ ऐसा नहिँ होना री ॥ हँसि हेरि हरे हरि लीन हियो सखि डार दियो कछु टोना री ॥ पल ओट परत नहिँ रहत चैन हठि प्रेम बीज उर बोना री । बलि रंगपाल अब अवध बने पर शोच शकुच सब खोना री ॥ ब० ॥ १२ ॥

## लावनी ।

लखन चलो सिय बनरो वारी । स्यामतन मदन मनोहारी ॥ पीतवर बागोज़रतारी जगामग भूषण अँगधारी । मोर मणि मण्डित छवि भारी ॥ भाल शुभ तिलक चिलक न्यारी । मकराकृत कुंडल श्रवनन, झलकत इमि छवि देत । मैन मोन मचले

मनहुँ, बदन चन्द रस हेत ॥ जग्गीलो जुलफ कतल कारी ॥ लखन० ॥ फसनि मन बिहसन अदुआरी । रसीलो अँखिया कजरारी ॥ बिलोकन बांकी तरवारी । युवति जन घायल करिडारी ॥ छिन छिन नइ नइ होति छबि, बरणि कौन विधि जाय । देखतहीं बनि आवई, रङ्गपाल सुख पाय ॥ अवध बनरे की बलिहारी । लखन चलो० ॥ १३ ॥

## ति० ।

बनरा बनिआयो आजरो ॥ श्री अवधेश दुलारो प्यारो आजि-अनुपम साजरो ॥ अङ्ग अङ्ग छवि पर बलिहारी कोटि २ रति-राजरो ॥ रङ्गपाल जिन लखो न तिनकी कहु अँखिया क्यहिं काजरो ॥ बनरा० ॥ १४

## होरीकी चालमें ।

बिहँसत हियरा हरि लेत, सजनी सिय बनरा ॥ चितवत चारु तिरीछे नैनन हाय कहर करि देत ॥ सजनी० ॥ मनमथ फन्द सँवारी जुलफें मनहिं फँसावन हेत ॥ सजनी० ॥ रंगपाल छबि-बदन बिलोकत रखत न कछु चित चेत ॥ सजनी सिय बनरा० ॥

## ग़ज़ल ।

बना यह क्या सलोना है, अहा हा हा ओहो हो हो ।
हुआ ऐसा न होना है, अहा हा हा ओहो हो हो ॥
निगह में नाज में बलदार, जुलफों में तबस्सुम में ।
अदा बांकी में टोना है, अहा हा हा ओहो हो हो ॥
कमाले हुस्न में जैसा, मिजाजे आफरीं तैसा ।

यही खुशबू व सोना है, अहा हा हा, ओहो हो हो ॥
न छेड़े रङ्गपाले तूं, इसी अब सांवले रँग में।
फिदा दिल को भिगोना है, अहा हा हा, ओहो हो हो ॥

॥ इति विवाहोत्सव के पद ॥

॥ श्रीहरिः ॥

# ॥ अथ बसन्तोत्स्व के पद ॥

॥ राग बहार तथा बसन्त ॥

आओ बसन्त, मनाओ, री ॥ यह ऋतु कन्त बसन्तपञ्चमी, राग बसन्तहि गाओ री ॥ आ० ॥ आई नवल बहार सपल्लव, बौर रसाल दिखाओ री ॥ आओ० ॥ रंगपाल आशीष सरस दे, मनवांछित फल पाओ री । आओ बसन्त मनाओ री ॥ १ ॥

॥ शुभम् ॥

# ॥ अथ होरी ॥

॥ राधा स्याम खेलत होरी ॥

तान तरङ्ग मृदङ्ग चङ्ग धुनि, बीन बांसुरी जोरी ॥ स्रौं भूषण झनकार अपारन, ह्वै सब सुर इक सोरो । गुँजि दिसि बिदिसि रह्योरी ॥ राधा० ॥ प्यारिहिं गहि बरजोरी मल्यो पिय, लगी अरध मुख रोरी । सरद सुधाधर अरुण जलध सो, आवत मनहु कढ़ोरी । लखति सखियां तृण तोरी ॥ राधा० ॥ मूठ अबिर सगु-लाल स्याम पर, झेलन लागीं गोरी । रवि शशि किरिणि चूरमणि

हरि कोरी ॥ प्यारो पास बिठाइ छीनि लइ मुरली पीत पिछोरी ॥ चोली चुरी पहिराय चुनर पुनि केसर की रंग बोरी ॥ बर जोरी अँजन आखिन दै मीड़ि कपोलन रोरी ॥ घूँघट को पट टारि कहति यह नन्दराय की छोरी ॥ बलि गइ दीठ न लगै काहु को लखियो सखि तृण तोरी ॥ बहु बिधि नाच नचाय स्याम को अपनो करि दिय छोरी ॥ युग युग जियो सुहाग भाग सो रङ्गपाल यह जोरी ॥ ६ ॥

## तिताला ।

आज दोउ खेलत होरी हो । राधे मनमोहन प्रेम भरे दोउ खेलत होरी हो० ॥ माची धूम दुहुँ दिसिते धूम धाम, तिहि छनतिय गन मैं प्रबिसि स्याम, बोरयो केसर के रँग ललाम, प्यारिहि बरजोरी हो ॥ आज दोउ० ॥ लहि घात लली ललिता सुदौरि । कर ते पिचकारी लई छीरि । ठगि रहे स्याम जनु लगि ठगोरि । मुख मलि गइ रोरी हो ॥ आज दोउ० ॥ कौतुक इमि इत उत होत अहो । बलि रंगपाल मन मुदित कहो । जु सुहाग भाग युत मगन रहो, युग युग यह जोरी हो ॥ आज दोउ० ॥ ७ ॥

## जति ताल ॥

दोउ खेलत राधा स्याम, होरी रङ्ग भरी ॥ बिहँसि परस्पर रोरी मलन मिस लपटत उर अभिराम ॥ होरी० ॥ माचो धूम नगर बरसाने आनँद आठो याम ॥ रङ्गपाल छबि निरखि हरषि मन वारत रति अरु काम ॥ होरी रंग भरी० ॥ ८ ॥

## खेलिये स्याम के संग होरी ॥

सरस सनेही सयोगिन भागन यह फागुन आयो री ॥ धमक धमार कि धूम धाम प्रति धाम धाम चहुँ ओरी ॥ मचौं दिन रैन अथोरी ॥ बरस बरस कबै खेल छाड़ तू बैठही भौंह मरो· री। चार दिना कि बहार समय यह चूको नाहिं नतोरी ॥ झूक जैहै भै किशोरी ॥ हा हा करत मुख सूखो पगन पुनि परत बहोरि बहोरी॥ फीको परो सिर टीको लाल को तउ कसको न हियोरी ॥ चहति अब काह कियोरी ॥ मान बेग तज मान कही नतो आजति राज करोरी। रंगपाल त्यों दीठ गई जुरि औ· चक मोहन सौं री॥ ललकि उर लाय लियोरी ॥ खेलिये स्याम के संग होरी ॥ ९ ॥

### अन्यं च।

बरसाने की गोरी चलीं बनि खेलन होरी। श्री मनमोहन रूप दरस रस, नैनन प्यास अथोरी ॥ मगन ध्यान मोहिनि मू· रति के, तन मन सुधि भइ भोरी। लगो हिय प्रेम की डोरी ॥ बरसाने की गोरी। तौलगि नन्दनँदन अलबेलो, औचक आनि परोरी ॥ सखन जुत्यसौं काढ़ि अति आतुर लै दोउ कर में रोरी। गयो मुख मलि बरजोरी ॥ बरसाने० ॥ चन्द्रावलि सो कुमरि मन्द हँसि, श्रीवृषभानु किशोरी। निरखि सलोनो तन घन सो सखि, नैनन नीर भरो री। तुमहुं सौं, कछु न बनो री॥ बर- साने की० ॥ रङ्गपाल गहि हरिहि स्वांगतिय, रचि मन भाय कियोरी। छोड़ि दई कहि यों हँसि होरी खेलहु इत रस बोरी ॥ बहुरि हो नन्द को छोरी ॥ बरसाने की० ॥ १० ॥

## तिताला।

होरी खेलही न जाने। जोइ आवत सोइ ठाने॥ होरी०॥ आये ओढ़ि कमरिया कारी जाति अहीर निदाने। निपट गँवार चार गैया पर फिरत मनहिं इतराने॥ ऐसे ढीठ भये लखु तौ सखि चढ़ि आये बरसाने॥ श्रीवृषभानु नृपहि नहिं जानत इन्द्र जासु डर आने। ताहू पर यह कारि तनको रूप गरब गर धाने॥ रंगपाल नहिं जोट प्रिया की लखि मुख मुकुर प्रमाने॥ होरी खेलही न जाने॥ ११॥

## अन्य।

अब फाग सांवरे सङ्ग, मेरे कौन खेलै॥ मेरे गोरे गात लगै कहुँ सजनी सांवर रंग॥ तापर अहिर कमरिया वारो हौं लखि ह्वै रहि दङ्ग॥ रंगपाल जू प्रेम पन्थ को ऐसहि अटपट ढङ्ग॥ मेरे कौन०॥

## भिन्नगतिको।

ऐसो नीको नहीं कान्ह रगर झगर॥ तुमहीं खेलारी नये क्या भये हटो, जाने दो नगर जिन रोको डगर॥ ऐसो०॥ नर-नारी होरी खेलैं सगर, ऐसी बरजोरी की न चाल मगर। मुख रोरी मलि चोली मसकाई, रंगपाल भये निपट लँगर। ऐसो०॥१२॥

होरी में, ऐसी क्या बरजोरी छयल। नये तुमहीं खेलारी! जाने दो हटो जिन रोको गयल॥ होरी में०॥ रंगपाल नई अँगिया मसकि गई, नीको नहीं ऐसो फन्द फयल॥ होरीमें०॥१३॥

मग रोकि रह्यो ऐसो ढींठ लँगर। कैसो करूं कैसे जाऊं